विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2569, 14 फरवरी, 2026, वर्ष 1, अंक 12 (संशोधित) (जुलाई 1971 से लगातार प्रकाशित)

रजि. नं. MHHIN/25/RAA23 प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00

अनेक भाषाओं में पत्रिका देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

धम्मवाणी

आयु आरोग्य-सम्पत्ति, सग्गसम्पत्तिमेव च।
ततो निब्बानसम्पत्ति, इमिना ते समिज्झतु।।

– धम्मवाणी संग्रह, धर्म करे कल्याण-23 वि.वि.वि.

(मेरे इस पुण्य-कर्म के प्रभाव से) तुम्हें दीर्घायु-संपत्ति प्राप्त हो, आरोग्य-संपत्ति प्राप्त हो, (समय आने पर) स्वर्ग-संपत्ति प्राप्त हो, और तदनंतर निर्वाण-संपत्ति प्राप्त हो!

धर्म के सजीव उदाहरण बनो

बरमा में सयाजी ऊ बा खिन से साधना सीख कर भारत आये गोयन्का परिवार के कुछ विपश्यी सदस्य चेन्नई में आकर बसे और बड़े भाई श्री बालकृष्ण गोयन्का की छत्रछाया में व्यापार-धंधे से जुड़ गये। बदले हुए वातावरण में साधना कमजोर हुई तो अपनी साधना को पुनर्जीवित और पुष्ट करने के लिए पूज्य गुरुजी के साथ फोन पर चर्चा हुई। तद्नुसार कुछ लोगों ने एक स्वयं शिविर लगाने का निश्चय किया, जिसे बल देने के लिए पूज्य गुरुजी ने जो उद्बोधन-पत्र लिखा वह भले देर से पहुँचा, पर हम सभी के लिए बड़ा ही प्रेरणास्पद है।

संयोग की बात है कि भारतीय तिथियों के अनुसार पूज्य गुरुजी एवं माता जी दोनों की जन्म-तिथियां फरवरी में आती हैं, इसीलिए फरवरी महीने में 14-दिवसीय कृतज्ञता शिविरों का आयोजन होता है। फरवरी में लिखे गये इस पत्र का फरवरी में ही प्रकाशन स्वयमेव प्रेरणास्पद है। —(सं.)

पूज्य गुरुजी का एक उद्बोधन-पत्र

रंगून, 4-2-1969.

प्रिय साधक-साधिकाओ!

धर्म को धारण करो!

साधना में कोई कठिनाई हुई हो तो उससे घबराना नहीं चाहिए। संस्कारों का मैल छँटने में कठिनाई तो होती ही है– फोड़े की मवाद निकलने की तरह। उसे धैर्यपूर्वक सह लेने में ही साधना की सिद्धि है। यह पत्र पहुँचने तक जो लोग अभी शिविर में बैठे हों, उनके लाभार्थ विपश्यना पर कुछ कहूं।

यह जो सिर से पांव तक सारे शरीर में, अंग-प्रत्यंग में, तुम्हें किसी न किसी संवेदना की अनुभूति हो रही है और इस अनुभूति को तुम इसके अनित्य रूप में देख-पहचान रहे हो- यही विपश्यना है। जितनी देर तुम इस अनित्यता का दर्शन कर रहे हो, उतनी देर सत्य के साथ हो और सत्य बड़ा शक्तिशाली है। जहां सत्य है वहां विद्या का बल है, अविद्या का क्षय है। जहां सत्य है वहीं ज्ञान है, बोधि है, प्रकाश है, निर्वाण है। और जहां ये सब हैं वहां अज्ञानता, मूढ़ता, अंधकार और मोह कैसे रह सकते हैं भला? राग और द्वेष कैसे रह सकते हैं भला? और ये ही तो चित्त के मैल हैं। ये ही फोड़े हैं, यह ही फोड़े की पीप हैं। इनके निकल जाने में ही चित्त की शांति है, चित्त की विशुद्धि है। विपश्यना का मार्ग विशुद्धि का मार्ग है, जहां चित्त की अशुद्धियां दूर होती हैं। विपश्यना का मार्ग ही निर्वाण का मार्ग है, जहां राग, द्वेष और मोह की अग्नियों का निर्वाण होता है, यानी, वे बुझती हैं। इनके बुझने का नाम ही परम शांति है। विपश्यना हमें इसी परम शांति की ओर ले जाती है। जितनी-जितनी आग बुझ गयी, उतनी-उतनी शांति हुई। जितना-जितना मैल छँट गया, उतनी-उतनी विशुद्धि हुई। इसलिए साधना के लिए यह जो अनमोल अवसर मिला है इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

सद्गुरु ने हमें साबुन दिया है, पानी दिया है और चित्त रूपी मैला कपड़ा हमारे पास है। अब इस साबुन-पानी का प्रयोग करके चित्त का मैल निकालने का काम हमारा है। हम कुछ काम ही नहीं करेंगे तो मैल कैसे छँटेगा और जितना काम करेंगे उतना ही तो छँटेगा। और फिर मैल अधिक होगा तो सारा मैल छँटने में समय लगेगा और यदि कम होगा तो काम जल्दी हो जायेगा। सबका मैल एक जैसा नहीं है और एक जितना भी नहीं है। किसी का कैसा है, किसी का कैसा। किसी का कितना है, किसी का कितना। इसलिए हर एक साधक को अपना मैल साफ करने पर ही ध्यान रखना चाहिए, औरों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। परिश्रम करके जितना मैल छांट लोगे, उतने हल्के हो जाओगे। मैल छांटने के लिए ही तो विपश्यना है। विपश्यना भला और क्या है?

इसलिए प्रतिक्षण सचेत रहो, जागरूक रहो, सचेष्ट रहो, सावधान रहो और देखते रहो कि जो कुछ अनुभव हो रहा है, वह प्रकृति का अनित्य स्वभाव ही अनुभव हो रहा है। इस इंद्रिय जगत के खेल में कहीं कुछ भी स्थायी नहीं है, ध्रुव नहीं है, नित्य नहीं है। सभी कुछ अनित्य है, क्षणभंगुर है, अध्रुव है, अशाश्वत है और जो अनित्य है, क्षणभंगुर है वह सुखदायी कैसे हो सकता है? वह तो सचमुच दुःख-स्वरूप है। ऐसे अनित्य एवं दुःखमय तन और मन के प्रति 'मैं और मेरे' का अहंभाव रखना नितांत मूर्खता है। यह तो अनात्म है। इस तरह अनित्य, दुःख और अनात्म का साक्षात्कार करते हुए उस इंद्रियातीत अवस्था तक पहुँचना है जो निर्वाण की अवस्था है; जो नित्य, ध्रुव और शाश्वत है। परंतु उस नित्य, ध्रुव और शाश्वत अवस्था की कामना-कल्पना नहीं करनी है। ऐसा करने लग जाओगे तो विपश्यना छूट जायगी। अतः विपश्यना में लगे रहो, अनित्य के ही दर्शन करते रहो। जो मार्ग बताया है उस पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ रहो, भटक मत जाओ। कल्याण

निश्चित है, मंगल निश्चित है, स्वस्ति-मुक्ति निश्चित है।

साशिष,

सत्य नारायण गोयन्का

(पूज्य गुरुजी के पत्रों में से साभार संकलित एवं अगस्त 2014 की विपश्यना पत्रिका में प्रकाशित)

पू. गुरुजी का एक और धर्म-पत्र

पड़ाव: बम्बई, 14 नवम्बर, 1970

देवी इलायची, धर्म प्रज्ञा जाग्रत रहे!

तुम्हारा 2 नवंबर का पत्र मिला, समाचार जाने। सचमुच मैं तुम्हें पिछले डेढ़ महीने से कोई पत्र न लिख सका। लगातार तीन शिविरों में व्यस्त रहा और कुछ दिनों तक पत्र लिखने वाला मेरा सहायक भी छुट्टी पर रहा।

दीपावली पर बहुत से साधक वहां घर पर आए और उन्होंने साथ में भोजन किया, जानकर मन प्रसन्न हुआ। उस दिन तुम सब ने अवश्य ही अपनी छत वाले साधना-कक्ष में ही ध्यान किया होगा! दीपावली का दिन उस साधना-कक्ष का महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि इसी दिन पूज्य गुरुदेव ने इसका उद्घाटन करते हुए साधना की थी। इस दिन तुम्हारा मन उदास नहीं होना चाहिए था। यह सच है कि मैं घर पर नहीं था, बहू सुशीला भी घर पर नहीं थी इसलिए दिवाली के दिन तुम्हें जरा सूनापन अवश्य महसूस हुआ होगा। लेकिन जो घर धर्मधातु से परिपूर्ण होता है, उसमें कभी सूनापन आता ही नहीं। वहां तो किसी प्रकार की उदासी रहनी ही नहीं चाहिए। तुम अपने सोने के कमरे में अथवा साधना के कमरे में अथवा आश्रम की कोठरी में, जहां भी बैठकर विपश्यना जगाओगी, वहीं तुम्हें महसूस होगा कि मैं तुमसे दूर नहीं हूं।

जीवन में बहुत बार ऐसी बातें हो जाती हैं जो ऊपर से देखने में अच्छी नहीं लगती। लगता है, हम अपने किन्हीं दुष्कर्मों का फल भोग रहे हैं। परंतु वही बात कौन जाने हमारे लिए कितने कल्याण का कारण बन जाती है। मेरे सिर-दर्द की ही बात लो, हर 15 दिन में जब मैं इस पीड़ा से व्याकुल होता था और क्रोध के मारे झुँझलाता था तो स्वयं तो दुःखी होता ही था, तुम्हारे लिए भी कितना दुःख पैदा करता था। उस समय बहुत बार यही मन में आता था कि न जाने मैंने कौन-सा ऐसा भयानक पाप कर्म किया है जिसकी वजह से इतनी असह्य पीड़ा सहनी पड़ती है और अपने साथ औरों को भी पीड़ित करना पड़ता है। परंतु अब देखता हूं कि वह सिर की पीड़ा मेरे लिए और तुम्हारे लिए कितना बड़ा वरदान बन गयी। हम दोनों के लिए ही नहीं, अपितु परिवार के लिए और न जाने कितने लोगों के लिए वरदान बनी। अब तो लगता है कि किसी जीवन में कोई बहुत बड़ा पुण्य का काम किया था। वह महान पुण्य करते हुए कोई साधारण-सी भूल हुई होगी, जिसके कारण ये पीड़ाएं तो आईं, परंतु उसके साथ जो गहरा पुण्य लगा हुआ था, उसके कारण इतना अनमोल धर्मरत्न प्राप्त हुआ। ऐसा कल्याणकारी मार्ग प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार 6 वर्ष पहले जब सरकार ने हमारा व्यापार ले लिया और दो वर्ष पहले जब सरकार ने हमारे कारखाने भी ले लिए तो ऊपर-ऊपर से तो लगा कि यह बहुत गलत हुआ, बड़ा अमंगल हुआ। हमारे किसी बहुत बड़े दुष्कर्म का फल जागा। परंतु दरअसल यह हमारे किसी बहुत बड़े पुण्य का ही फल था जिसकी वजह से ही हमें ऐसा अवसर मिला कि हमने पिछले 6 वर्षों में इतनी बड़ी धर्म की कमाई की, जो कि ऐसा न होता तो कभी न कर पाते। इस प्रकार तीन-चार महीने के लिए भारत आने को मिला और अब लगभग डेढ़ वर्ष से तुम सबसे दूर हूं तो ऊपर-ऊपर से बहुत बुरा लगा, तुम्हारे लिए भी ऐसी स्थिति बड़ी दुःखदायी लगी। परंतु तुम्हारे इस दुःख के भीतर इतने लोगों का सुख समाया हुआ है इस बात को जब सोचता हूं तो लगता है कि हम दोनों ने अपने पूर्व जन्मों में सचमुच बड़े पुण्य का काम किया था जो ऐसा मौका हाथ आया।

यदि तुम भी मेरे साथ भारत आ जाती तो निश्चय ही मुझे कहीं न कहीं घर बसा कर टिक जाना पड़ता। परंतु अब तो मैं परिवार और व्यापार की जितनी साधारण जरूरत है, उतनी ही देखभाल करते हुए सारे देश में धर्म चारिका करता फिर रहा हूं। भगवान बुद्ध ने अपने धर्म-पुत्रों से कहा था कि जाओ—बहुत लोगों के भले के लिए, बहुत लोगों के हित-सुख के लिए, सभी लोगों पर करुणा करते हुए, स्थान-स्थान पर धर्मचारिका करो और लोगों को धर्म सिखाकर उनके दुःख दूर करते हुए, उन्हें सुख और शांति दो। मुझे लग रहा है कि मैं भी भगवान बुद्ध के उसी आदेश का पालन कर रहा हूं, और देखता हूं कि इसमें मेरा भी बहुत बड़ा स्वार्थ समाया हुआ है। हर एक शिविर के बाद धर्म का बल जागता है और मैं अपने आप को बड़ा बलवान महसूस करता हूं। इसके पूर्व सुबह 6:00 बजे से लेकर रात के 11:00 बजे तक इस प्रकार कड़ी मेहनत करने की आदत मुझमें नहीं थी। यदि कभी इतनी कड़ी मेहनत करता भी तो बड़ी थकान महसूस होती, बड़ी झुँझलाहट आती और कभी-कभी वह गुस्सा तुम पर और बच्चों पर भी निकालता। परंतु अब तो इतनी बड़ी मेहनत करने के बाद भी चित्त शांत रहता है और हर शिविर के बाद मन को सुखद संतोष होता है कि मैंने अपने पिछले सभी दिन किसी बड़े अच्छे काम में लगाए। इस प्रकार मुझे जो सुख-शांति का धर्मबल मिलता है, उससे सारे शारीरिक कष्ट हल्के पड़ जाते हैं। परंतु मैं देखता हूं कि अधिकांश शिविरों में किसी न किसी प्रकार की असुविधा तो होती ही है और यदि तुम मेरे साथ इन शिविरों में भाग लेती तो अवश्य मेरी थोड़ी बहुत सहायता, सेवा और देखभाल तो करती, परंतु निश्चय ही तुम्हारे रहने, बैठने और यात्रा आदि की मुसीबतें इस धर्म के काम में बड़ी बाधा पैदा करतीं।

इस देश में धर्म का नन्हा-सा बिरवा लगाने के लिए शायद मुझे अकेले ही सारी मेहनत करनी आवश्यक है, तभी मेरा धर्मबल पूरी तरह बढ़ पायेगा। और इसके बाद जब समय पकेगा तब आज जिन असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है वे दूर हो जायेंगी। उस समय तुम भी मेरे साथ इस धर्म कार्य में सहयोगिनी बनोगी। पता नहीं इस काम के लिए कितना समय लगेगा, पर मैं नहीं समझता कि बहुत लंबा समय लगेगा। स्थितियां अनुकूल होंगी और शीघ्र होंगी। इतने दिनों तुम भी वहां पूज्य गुरुदेव और मां सयामा के साथ रहकर आश्रम का लाभ उठाकर अपने धर्मबल को तेज करती रहो जिससे कि जब कभी भारत आओ तो यहां जो तुम्हारा धर्म-परिवार बढ़ रहा है, वे तुम्हारे तेज को देखकर प्रेरणा प्राप्त करें। इस देश के लोगों को भी मालूम हो कि एक गृहस्थ योगिनी किस प्रकार धर्मविहारिणी होती है। तुम्हारा आदर्श यहां तुम्हारी अनेक बेटियों के लिए धर्म संवेग पैदा करने वाला होगा। और इसके लिए तुम्हें वहीं रहकर अपना धर्मबल बढ़ाते रहना होगा।

आज तो ऐसी विचित्र स्थिति पैदा हो गई है कि मेरा शीघ्र बर्मा लौटना उचित नहीं है और तुम तब तक भारत नहीं आ सकती जब तक कि बाबू भैया और उनके साथ सारा परिवार वहां अटका हुआ है। लेकिन नहीं, यह अवस्था कई साल रहने वाली नहीं है। निकट भविष्य में ही परिवर्तन आयेंगे। सरकारी नीति बदलेगी और इस समय जो बंधन लगे हैं, वे समय पकने पर अपने आप खुल जायेंगे, और जिस दिन बंधन खुलेंगे, उस दिन ऐसा महसूस होगा कि इतने दिन अलग रहने में ही हम सब का कल्याण था। तुम्हें किसी बात से घबराना नहीं चाहिए। घबराने से ही धर्म मंद पड़ता है। हर मुसीबत को मुस्कराकर देखने का नाम ही तो धर्म है।

हम इस बात की कोशिश में लगे हैं कि बहू मंजु और बच्ची विशाखा को शीघ्र ही तुमसे मिलने के लिए बर्मा भेज सकें। यहां ये दोनों बहुत प्रसन्न और

स्वस्थ हैं। गिरधारी के स्वास्थ्य में भी बहुत सुधार हुआ है। इस बम्बई वाले शिविर में गिरधारी और मंजु भी आधे समय के लिए बैठे। विशाखा की वजह से मंजु पूरा कोर्स नहीं ले सकी। गिरधारी की भी परीक्षाएं थीं, इसलिए वह भी पूरा समय नहीं दे सका। परंतु दोनों जितनी देर बैठ पाये उससे लाभ ही हुआ। पहले साधना से मुँह चुराते थे अब घर आकर वे दोनों मेरे साथ बैठकर साधना करते हैं। श्याम बिहारी और शिव ने पूरा कोर्स लिया। जबलपुर से श्री वासुदेवजी भी कोर्स में शामिल होने के लिए आए। गुडम से राधे और विमला आए थे। राधे तो आधे दिन काम पर चला जाता परंतु विमला ने पूरा कोर्स लिया। इन सब को बहुत ही लाभ हुआ। इनके साथ सब मिलाकर पचास लोगों ने शिविर में भाग लिया। इतने बड़े शिविर का इतना बड़ा पुण्य और इस पुण्य की तो तुम भागीदारिणी हो ही। तुम्हारी जैसी धर्म विहारिणी जीवन संगिनी मुझे न मिलती तो मैं यह धर्मलाभ कैसे प्राप्त कर सकता था! इसीलिए कहता हूं कि ऊपर-ऊपर से जो ये दुःख के दिन लगते हैं वे वस्तुतः बड़े पुण्य के दिन हैं। तुम्हारा कोई बहुत बड़ा पुण्य फलित हो रहा है जिसके बल पर इतना बड़ा धर्मकार्य हो रहा है। तुम्हें अपने पुण्य को हरित रखना चाहिए, अपने मन को प्रसन्न रखना चाहिए। मन में जरा-सी भी उदासी लाओगी तो मेरा धर्मबल क्षीण होगा। हम दोनों ने अनगिनत जन्मों में साथ-साथ पुण्य के काम किए थे, इसीलिए इस महान पुण्य के फल को मैं अकेला नहीं भोग सकता। इस पुण्य में तुम्हारा तो हिस्सा है ही। तुम जितनी देर वहां साधना करती हो, अपने भीतर धर्म जगाती हो, धर्म की गंगा में नहाती रहती हो, चित्त को प्रसन्न रखती हो उतनी देर मेरी धर्म सिखाने की ताकत बढ़ती रहती है क्योंकि मेरे धर्मबल के साथ-साथ तुम्हारे पुण्य की तरंगें भी अपना काम करती ही हैं। परंतु जैसे ही तुम अपना धर्म मंद कर लेती हो, चित्त में कमजोरी ले आती हो, उदास हो जाती हो, वैसे ही तुम्हारे पुण्य की धारा शिथिल हो जाती है तो लगता है मेरे धर्म का पौधा भी कुछ-कुछ मुरझाने लगा है।

तुम मेरे अनेक जन्मों की संगिनी हो इसलिए तुम्हें चाहिए कि अपनी धर्म-गंगा को सूखने न दो जिससे कि मेरा धर्मबल बना रहे और हम दोनों का पुण्य और भी अधिक फलता-फूलता रहे, ताकि न केवल हम दोनों का कल्याण हो बल्कि सारे परिवार का कल्याण हो। और न केवल इस छोटे से परिवार का ही कल्याण हो, बल्कि यह जो दिन पर दिन धर्म का परिवार बढ़ता जा रहा है उन सब का भी कल्याण हो। सारे विश्व का कल्याण हो।

तुम्हारा जीवन साथी,
सत्य.

तिपिटक अनुवाद परियोजना

हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि वीआरआई एक तिपिटक अनुवाद परियोजना (हिंदी) शुरू कर रहा है। इस पहल का समर्थन करने के लिए, वीआरआई द्वारा मार्च २०२६ से मार्च २०२७ तक नियमित अंतराल पर जारी रहने वाली 'कच्चायन व्याकरण' पर पांच आवासीय कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की जाएगी।

पात्रता: (1) साधकों ने कम से कम पांच 10-दिवसीय विपश्यना शिविर, और १ सतिपट्ठान शिविर पूरा किया हो। **(2) ऐडवांस (उच्चतर) पालि** के वे साधक जिन्होंने पहले उच्च स्तर तक पालि भाषा में प्रशिक्षण लिया है। और **(3)** उन साधकों को जिन्हें हिंदी भाषा में तिपिटक के अनुवाद के क्षेत्र में अपनी धम्म सेवा प्रदान करने में रुचि हो।

अधिक जानकारी के लिए कृपया ईमेल करें: pali@vridhamma.org

उड़ीसा में 'धम्म कोसल' नया विपश्यना केंद्र

उड़ीसा में एक और विपश्यना केंद्र के लिए वर्तमान गांव- तितिलागढ़, बालांगिर जिले में जमीन खरीदी गयी और काम प्रारंभ हो गया है। इसका भी अपना ऐतिहसिक महत्त्व है। यहां पर हो रहा धर्म-प्रसार अनेकों के मंगल का कारण बनेगा। जो भी साधक-साधिका अपनी पुण्य पारमिताओं का संवर्धन करना चाहें, इस धर्मकार्य में भागीदार बन सकते हैं।

विवरण: बैंक खाता-'तितिलागढ़ विपस्सना केंद्र', इंडियन बैंक, तितिलागढ़, खाता क्रमांक- 7163712955, IFSC Code IDIB000T598.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क: 8327750368, 8895963112, 7978630566, 7978063596. E-mail: info.kosala@vridhamma.org

मंगल मृत्यु

1. श्री महासुख मोहनलाल खांधारजी 89 वर्ष की पकी उम्र में 6 जनवरी, 2026 को अपने निवास पर बहुत शांतिपूर्वक दिवंगत हुए। जीवन के अंतिम क्षण तक वे धर्मसेवा ही करते रहे। मृत्यु के बाद उनका चेहरा धम्म आभा से चमक रहा था। 1980 में पहला शिविर किया तभी से विपश्यना से जुड़ गये। धर्मपथ पर आगे बढ़ते हुए 1991 में सहायक आचार्य नियुक्त हुए और पूज्य गुरुजी के निकट संपर्क में आये। अनेक प्रकार से सेवा करते हुए 1997 में पूर्ण आचार्य बने। 2007 में धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र के आचार्य बने और 2012 में मुंबई, ठाणे, नाशिक और द. अफ्रीका के क्षेत्रीय संयोजक आचार्य बन कर गंभीररूप से धर्मसेवा की। इतना ही नहीं 2012 में पूज्य गुरुजी के मुख्य सचिव बन कर साधकों से लेकर सरकारी पत्राचार तक में उनके सहयोगी बने। दक्षिण अफ्रीकी साधकों की कथा-व्यथा सुन कर पूज्य गुरुजी ने उनकी सहायता की जिम्मेदारी इन्हें सौंपी, जिससे वहां जिप्सी कैंप लगने लगे और फिर वि. केंद्र भी बने। पूरे अफ्रीका के लिए इनका निर्देशन बड़ा कल्याणकारी सिद्ध हुआ। उस क्षेत्र में अनेक लोग विपश्यना के सहायक आचार्य नियुक्त हुए।

पूज्य गुरुजी को जब भी जरूरत पड़ती वे 5 मिनट के अंदर ऊपर उनके पास चले आते। क्योंकि उनका कार्यालय मेफेयर मेरीडियन में नीचे ही रखा गया था।

ग्लोबल विश्यना पगोड़ा के निर्माण एवं रख-रखाव में भी इंजीनियर श्री खांधारजी का सहयोग अत्यंत सराहनीय था। अनेक अवसरों पर उनकी सलाह बहुत कारगर सिद्ध होती। वे नपेतुले शब्दों में कल्याणकारी बात ही बोलते और विवादों से दूर रहते। उनका सादगीभरा जीवन, साधना और निर्देशन सदैव अनुकरणीय रहेगा। सबको सुख देने वाले महासुख का हँसमुख चेहरा सब को आकर्षित करने वाला था। वे धर्मपथ पर सतत आगे बढ़ते हुए निब्बानलाभी हों, धर्म परिवार की यही मंगल कामना है।

2. चेन्नई की सहायक आचार्या श्रीमती मोहिनी देवी सरावगी ने 85 वर्ष की उम्र में 10 जनवरी, 2026 को शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। वे पूज्य गुरुजी की सबसे छोटी बहन थीं और अपने पहले शिविर से ही धर्मसेवा करती हुई 1996 में सहायक आचार्या बनीं। उन्होंने न केवल साधकों की सेवा की बल्कि 'धम्मसेतु विपश्यना केंद्र, चेन्नई के विकास व संचालन में परिवार सहित बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके इस महान पुण्य के फलस्वरूप निब्बानलाभी होने तक वे धर्मपथ पर सतत प्रगति करती रहें, धम्म परिवार की यही मंगल कामना।

ऐडवांस (उच्चतर) पालि-हिंदी आवासीय कोर्स – २०२६

आवेदन की अंतिम तिथि: १ अप्रैल २०२६। कोर्स की जानकारी व पंजीकरण के लिए देखें:
https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री प्रशांत एवं श्रीमती वनिता पाटिल,धम्म सुगंध विपश्यना केंद्र सांगली के लिए केंद्र आचार्य के रूप में सेवा
2. श्री जयेश मेहता, धम्म मधुरा विपश्यना केंद्र मदुराई के लिए केंद्र आचार्य के रूप में सेवा
3. Mr. Brian Wagner, To serve as Coordinator Area Teacher for South Africa

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. श्री रघुनाथ कुरुप, केरल

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री देवेंद्र गोस्वामी,धम्म रव विपश्यना केन्द्र कच्छ, के लिए केंद्र आचार्य के रूप में सेवा
2. डॉ. रचना भारद्वाज, मुंबई
3. श्रीमती सुषमा नायक, मुंबई
4. श्रीमती स्नेहल मदुस्कर, मुंबई
5. श्री सुहास कांबले, पुणे
6. श्रीमती शाम्भवी कारखानीस, पुणे
7. श्री उत्तम कांबले, बीड
8. श्रीमती पुष्पा कांबले, बीड
9. श्री सुनीलसिंग बायस, बीड
10. श्री करसन पटेल, औरंगाबाद
11. अरविंद पाटिल, औरंगाबाद
12. श्री रामअवतार शर्मा, गजियाबाद
13. श्रीमती निर्मला सिंह, गुरुग्राम, हरियाणा
14. Miss. Nittaya Saenthawisuk, Thailand

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री संदीप मान,पंचकुला, हरियाणा
2. श्रीमती ममता मिश्रा, भुवनेश्वर, उड़ीसा
3. श्रीमती साई माधवी मयदम, रंगा रेड्डी, तेलंगाना
4. श्री राजुल लाईन्सवाला, कोल्हापुर, महा.

बाल शिविर शिक्षक

1. श्रीमती निधि पारिख, अहमदाबाद. गुजरात
2. श्रीमती नंदिता बैलुंग, गुवाहाटी
3. श्री दिनेश दास, बर्धमान, प. बंगाल
4. श्रीमती वनिता पटेल, सूरत, गुजरात
5. श्रीमती भूमिका लिम्बानी, सूरत, गुजरात
6. डॉ. दमयंती प्रसाद, सूरत, गुजरात
7. श्री प्रतीक सावलिया, सूरत, गुजरात
8. श्री नानिक्रम, बिंवानी, सूरत, गुजरात
9. श्री कल्पेशकुमार पटेल, मेहसाना, गुजरात
10. श्री प्रकाश श्रॉफ, अहमदाबाद, गुजरात
11. श्री पंकज कुमार भगत, पाटन, गुजरात

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविरः

1. रविवार 3 मई, 2026 बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में,

2. रविवार 26 जुलाई, आषाढ़ पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में,

3. रविवार 4 अक्टूबर, शरद-पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में।

4. रविवार, 17 जनवरी, 2027 सयाजी ऊ बा खिन एवं माता जी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में,

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—समग्गानं तपोसुखो। **महाशिविर एवं अन्य एक दिवसीय शिविरों के लिए संपर्कः 022 50427500 (Board Lines) -** Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email:** oneday@globalpagoda.org

3.'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or **Email-** *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

शुद्ध धरम ऐसा मिला, राग जगे ना द्वेष।
चित्त निपट निर्मल बने, रहे न दुख लवलेश॥

ब्रह्मदेश गुरुवर मिले, जिनका प्रबल प्रताप।
जन-जन में जागे धरम, दूर होंय भवताप॥

सद्गुरु की संगत मिली, जागा पुण्य अनंत।
सत्य धर्म का पथ मिला, करे पाप का अंत॥

सद्गुरु की करुणा जगी, दिया धर्म का सार।
संप्रदाय के बोझ का, उतरा सिर से भार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जदि सतगुरु देतो नहीं, सत्य धरम परकास।
तो अंतर मँह रैवतो, अंधकार रो बास॥

सतगुरु री संगत मिली, मिल्यो सत्य रो सार।
जीवन सफळ बणा लियो, हिय रो उतर्यो भार॥

सोयो खोयो मोह मँह, जीवन दियो बिताय।
जागो! जागत जागतां, परम सत्य मिल ज्याय॥

आओ! मानव मानवी, सुणां बुद्ध रो ग्यान।
बोधि ग्यान जीं रो जग्यो, हुयो परम कल्याण

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2569, 14 फरवरी, 2026, वर्ष 1, अंक 12

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50) "विपश्यना" (संशोधित) रजि. नं. MHHIN/25/RAA23, **प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

Posting day- **14th of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)
DATE OF PRINTING: 10 February, 2026, DATE OF PUBLICATION: 14 February, 2026

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 244076, 244086,
244144, 244440, मोबा.: 9405618869
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org